अंगूठे चूमने
का मसला
मौलाना मुहम्मद शफ़ी औकाड़वी
इस्लामिक पब्लिशर

तमाम भाईयो को सलाम किताबे

स्केन करके पीडिएफ में आप

तक पहुँचाने के लिए इस

फक़ीर को अपनी दुआओ में

खास तौर पर याद रखे।

दुआओ का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

अंगूठे चूमने का मसला

(सुन्नते सिद्दीक़ी)

लेखक

मौलाना मुहम्मद शफ़ी औकाड़वी

प्रकाशक

इस्लामिक पब्लिशर

447, गली सरौते वाली, मटिया महल, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन: 011-23284316, 011-23284582

Ph:(011)23284316, Fax: 23284582

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू वनुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

हुजूर पुरनूर शफ़ीए यौमुन्नशूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नामे पाक अज़ान में सुन्ने के वक़्त अंगूठे या अंगुशताने शहादत चूम कर आँखों से लगाना क़तअन जाइज़ व मुस्तहब और बहुत ही बाइसे रहमत व बरक़त है। इस के जवाज़ पर दलाइले कसीरा मौजूद हैं और मुमानियत पर कोई दलील मौजूद नहीं। चन्द दलाइल हदयऐ नाज़रीन हैं। (१)

(१) अल्लामा अलफ़ाज़िल अलक़ामिलुल शैख़ इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाह अलैह अपनी शोहरए आफ़ाक़ तफ़सीर रूहुलब्यान में फरमाते हैं।

وَفِي قَصَصِ الْاَنْبِيَاءِ وَغَيْرِهَا اَنَّ اٰدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ اشْتَاقَ اِلٰى لِقَاءِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ كَانَ فِي الْجَنَّةِ فَاَوْحَى اللّٰهُ تَعَالٰى اِلَيْهِ هُوَ مِنْ صُلْبِكَ وَيَظْهَرُ فِي اٰخِرِ الزَّمَانِ فَسَأَلَ لِقَاءَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ كَانَ فِي الْجَنَّةِ فَاَوْحَى اللّٰهُ تَعَالٰى اِلَيْهِ فَجَعَلَ اللّٰهُ النُّوْرَ الْمُحَمَّدِيَّ فِي اِصْبَعِهِ الْمُسَبِّحَةِ مِنْ يَدِهِ الْيُمْنٰى فَسَبَّحَ ذٰلِكَ النُّوْرُ فَلِذٰلِكَ سُمِّيَتْ تِلْكَ الْاَصْبَعُ مُسَبِّحَةً كَمَا فِي الرَّوْضِ الْفَائِقِ اَوْ اَظْهَرَ اللّٰهُ تَعَالٰى جَمَالَ حَبِيْبِهِ فِي صِفَاءِ ظُفْرَيْ اِبْهَامَيْهِ مِثْلَ الْمِرْآةِ فَقَبَّلَ اٰدَمُ ظُفْرَيْ اِبْهَامَيْهِ وَمَسَحَ عَلٰى عَيْنَيْهِ فَصَارَا اَصْلًا لِذُرِّيَّتِهِ فَلَمَّا اَخْبَرَ جِبْرِيْلُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهٰذِهِ الْقِصَّةِ قَالَ عَلَيْهِ السَّلَامُ مَنْ سَمِعَ اِسْمِيْ فِي الْاَذَانِ فَقَبَّلَ ظُفْرَيْ اِبْهَامَيْهِ وَمَسَحَ عَلٰى عَيْنَيْهِ لَمْ يَعْمَ اَبَدًا (روح البیان جلد نمبر ۴ ص ۶۴۹)

तर्जमाः कससुल अम्बिया वग़ैरह कुतुब में है कि जब हज़रत आदम

हाशिया: मसला हाज़ा के मुतअल्लिक़ मुफ़स्सल बहस देखनी हो तो "मुनीरुलऐन फी हुकमे तक़बीलुल अबहामीन" मुसन्निफा आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह व "जाअल हक़ व ज़हक़ल बातिल" मुसन्निफा हज़रत मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ का मुताअला करें।

अलैहिस्सलाम को जन्नत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुलाक़ात का इश्तियाक़ हुआ तो अल्लाह तआला ने उन की तरफ़ वही भेजी कि वह तुम्हारे सल्ब से आख़िर ज़माने में ज़ुहूर फ़रमायेंगे तो हज़रत आदम ने आपकी मुलाक़ात का सवाल किया तो अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम के दायें हाथ के कलमे की अंगुली में नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चमकाया तो उस नूर ने अल्लाह की तस्बीह पढ़ी, इसी वास्ते इस उंगली का नाम कलमे की उंगली हुआ जैसा कि रौज़ुलफाइक़ में है, और अल्लाह तआला ने अपने हबीब के जमाले मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत आदम के दोनों अंगूठों के नाखूनों में मिस्ले आइना ज़ाहिर फरमाया तो हज़रत आदम ने अपने अंगूठों के नाखूनों को चूम कर आँखों पर फेरा पस यह सुन्नत उन की औलाद में जारी हुई। फिर जब जिब्राईले अमीन ने नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस की ख़बर दी तो आपने फरमाया जो शख़्स अज़ान में मेरा नाम सुने और अपने अंगूठों के नाखूनों को चूम कर आँखों से लगाए वह कभी अन्धा न होगा।

(२) इसी तफसीर रूहुल बयान में है कि:-

درمحیط آورده که پیغمبر صلی اللہ علیہ وسلم بمسجد در آمد نزدیک ستون بنشت وصدیق رضی اللہ عنہ دربرابر آنحضرت نشستہ بود بلال رضی اللہ عنہ برخاست وباذان اشتغال فرمود چوں گفت اشہدان محمد رسول اللہ ابوبکر رضی اللہ عنہ ہر دو ناخن ابہامین خودرا بر ہر دو چشم خود نہادہ گفت قرۃ عینی بک یا رسول اللہ چوں بلال رضی اللہ عنہ فارغ شد حضرت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرمودہ یا ابا بکر ہر کہ بکند چنیں کہ تو کردی خدائے بیامرزد گناہان جدید وقدیم اور اگر بعمد بودہ باشد اگر بخطاء

तर्जमाः मुहीत में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए और एक सुतून के क़रीब बैठ गये। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हु भी आप के बराबर वैठे थे। हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाह अन्हु ने उठकर अज़ान देना शुरू की। जब उन्होंने अशहदुअन्ना मुहम्मदुर रसूलल्लाह कहा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हु ने अपने दोनों अंगूठों के नाखूनों को अपनी दोनों आँखों पर रखा और कहा कुर्रतू ऐनी बक या रसूलल्लाह। जब हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाह अन्हु अज़ान दे चुके, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ अबू बक्र जो शख़्स ऐसा करे जैसा कि तुम ने किया है ख़ुदा तआला उसके तमाम गुनाहों को बख़्श देगा।

(۳) وحضرت شیخ امام ابوطالب محمد بن علی المکی رفع اللہ درجتہ درقوت القلوب روایت کردہ از ابن عینیہ رحمۃ اللہ کہ حضرت پیغمبر علیہ الصلوۃ والسلام بمسجد درآمد درد ہہ محرم وبعد از انکہ نماز جمعہ ادا فرمودہ بود نزدیک اسطوانہ قرار گرفت وابوبکر رضی اللہ عنہ بظہر ابہامین چشم خود را مسح کرد وگفت قرۃ عینی بک یا رسول اللہ وچوں بلال رضی اللہ عنہ از اذان فراغتی روے نمود حضرت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرمودہ کہ ای ابا بکر ہر کہ بگوید آنچہ تو گفتی از روے شوق بلقاے من وبکند آنچہ تو کردی خداے در گزارد گناہان ویرا انچہ باشد نو وکہنہ خطا وعمدہ نہاں وآشکاراں

(تفسیر روح البیان ج ۴ ص ۶۴۸)

तर्जमाः और हज़रत शैख़ इमाम अबू तालिब मुहम्मद बिन अली अलमक्की (अल्लाह उनके दरजात बुलन्द करे) अपनी किताब कुव्वतुल कुलूब में इब्ने ऐनिया से रिवायत फरमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़े जुमा अदा करने के लिए मुहर्रम की दसवीं

तारीख़ को मस्जिद में तशरीफ़ लाऐं और एक सुतून के करीब बैठ गये। हज़रत अबू बक्र रज़ि अल्लाह अन्हु ने (अज़ान में हुजूर का नाम सुन कर) अपने दोनों अंगूठों के नाख़ूनों को अपनी आंखों पर फेरा और कहा कुर्रतू ऐनी बिका या रसूलल्लाह जब हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाह अन्हु अज़ान से फ़ारिग़ हो गये हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ अबू बक्र जो शख़्स तुम्हारी तरह मेरा नाम सुन कर अंगूठे आंखों पर फेरे और जो तुमने कहा वह कहे ख़ुदा तबारक व तआला उसके तमाम नये व पुराने, ज़ाहिर व बातिन गुनाहों से दर गुज़र फरमाऐगा।

(४) अल्लामा इमाम शमसुद्दीन सख़ावी रहमतुल्लाह अलैहि दैलमी के हवाले से नक़ल फरमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहो अन्हु ने

لَمَّا سَمِعَ قَوْلَ الْمُؤَذِّنِ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ قَالَ هٰذَا وَقَبَّلَ بَاطِنَ الْاَنْمُلَتَيْنِ السَّبَابَتَيْنِ وَمَسَحَ عَلٰى عَيْنَيْهِ فَقَالَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ فَعَلَ مِثْلَ مَا فَعَلَ خَلِيْلِىْ فَقَدْ حَلَّتْ لَهٗ شَفَاعَتِىْ

(المقاصد الحسنہ فی الاحادیث الدائرہ علی السنہ)

तर्जमाः जब मोअज़्ज़िन को अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलल्लाह कहते सुना तो यही कहा और अपनी अंगुशताने शहादत के पोरे जानिब ज़ेरीं से चूम कर आँखों से लगाए तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख़्स मेरे इस प्यारे दोस्त की तरह करेगा मेरी शफ़ाअत उसके लिए हलाल हो गई।

(५) यही इमाम सख़ावी हज़रत अबुल अब्बास अहमद बिन अबी बक्र अलरिदाद अलीमानी की किताब "मोजिबातुर्रहमा व अज़ाइमुल मग़फिरह" से नक़्ल फरमाते हैं कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फरमाया।

مَ۔ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ يَقُوْلُ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ مَرْحَبًا

بِحَبِيْبِیْ وَقُرَّةُ عَيْنِیْ مُحَمَّدِ بْنُ عَبْدِ اللهِ ثُمَّ قَبَّلَ اِبْهَامَيْهِ وَيُجْعَلُهُمَا عَلٰى عَيْنَيْهِ لَمْ يَرْمُدْ اَبَدًا (المقاصد الحسنة)

तर्जमाः जो शख़्स मोअज़्ज़िन से अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलल्लाह सुन कर कहे मरहबा या बेहबीबी व कुर्रतु ऐनी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फिर दोनों अंगुठे चूम कर आँखों पर रखे उस की आंखें कभी न दुखेंगी।

(६) यही इमाम सख़ावी फक़ीह मुहम्मद बिन सईद ख़ुलानी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत करते हैं कि सैय्यदना हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने फरमाया।

مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ يَقُوْلُ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ مَرْحَبًا بِحَبِيْبِیْ وَقُرَّةُ عَيْنِیْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُقَبِّلُ اِبْهَامَيْهِ وَيَجْعَلُهُمَا عَلٰى عَيْنَيْهِ لَمْ يَعْمِ وَلَمْ يَرْمُدْ (المقاصد الحسنة)

तर्जमाः जो शख़्स मोअज़्ज़िन से अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलअल्लाह सुनकर कहे मरहबा बेहबीबी व कुर्रतू ऐनी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फिर दोनों अंगूठे चूम कर आँखों पर रखे वह कभी अन्धा न होगा और न उस की आँखें कभी दुखेंगी।

(७) यही इमाम सख़ावी, शम्सुदीन इमाम मुहम्मद बिन सालेह मदनी की तारीख़ से नक़्ल फरमाते हैं कि उन्होंने फरमाया मैंने हज़रत मुजद्दिद मिस्री को जो कामिलीन सालेहीन में से थे फरमाते सुना कि

مَنْ صَلّٰى عَلَى النَّبِیِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا سَمِعَ ذِكْرَهٗ فِی الْاَذَانِ وَجَمَعَ اِصْبَعَيْهِ الْمُسَبِّحَةِ وَالْاِبْهَامِ وَقَبَّلَهُمَا وَمَسَحَ بِهِمَا عَلٰى عَيْنَيْهِ لَمْ يَرْمُدْ اَبَدًا

(المقاصد الحسنة)

तर्जमाः जो शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िक्रे

पाक अज़ान में सुन कर दुरूद भेजे और कलमे की उंगलियां और अंगूठे मिला कर उन को बोसा दे और आँखों पर फेरे उसकी आँखें कभी न दुखेंगी।

(८) यही इमाम सखावी, इन्ही इमाम मुहम्मद बिन सालेह की तारीख़ से नक़्ल फरमाते हैं कि उन्होंने फरमाया इराक़ के बहुत से मशाइख़ से मरवी हुआ है कि जब अंगूठे चूम कर आँखों पर फेरे तो यह दुरूद शरीफ़ पढ़े (सल्लल्लाहो अलैका या सैय्यदी या रसूलल्लाह या हबीबा क़लबी व या नूरा बसरी व या कुर्रता ऐनी) इन्शा अल्लाह कभी आँखें न दुखेंगी और यह मुजर्रब है। इसके बाद इमाम मज़कूर फरमाते हैं कि जब से मैंने यह सुना है यह मुबारक अमल करता हूँ आज तक मेरी आँखें न दुखी हैं और न इन्शाअल्लाह दुखेंगी। (अलमक़ासिदुल हुस्ना)

(९) यही इमाम सख़ावी इमाम ताऊसी से नक़्ल फरमाते हैं कि उन्होंने शम्सुदीन मुहम्मद अबी नस्र बुख़ारी ख़्वाजए हदीस से यह हदीस मुबारक सुनी फरमाया

مَنْ قَبَّلَ عِنْدَ سِمَاعِهٖ مِنَ الْمُؤَذِّنِ كَلِمَةَ الشَّهَادَةِ ظُفْرَیْ اِبْهَامَيْهِ وَمَسَحَهُمَا عَلٰى عَيْنَيْهِ وَقَالَ عِنْدَ الْمَسِّ اَللّٰهُمَّ احْفَظْ حَدَقَتِیْ وَنَوِّرْهُمَا بِبَرَكَةِ حَدَقَتِیْ مُحَمَّدٍ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُوْرِهِمَا لَمْ يَعْمِ (المقاصد الحسنة)

तर्जमाः जो शख़्स मोज़्ज़िन से कलमए शहादत सुन कर अंगूठों के नाख़ुन चूमे और आँखों पर फेरे और यह पढ़े अल्लाहुम्माफज़ हदाक़ती व नूराहुमा बिबरकती हदाक़ती मुहम्मदिर रसूललिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व नूरेहिमा वह कभी अन्धा न होगा।

(१०) शरह नक़ाया में है

وَاعْلَمْ اَنَّهٗ يُسْتَحَبُّ اَنْ يُّقَالَ عِنْدَ سِمَاعِ الْاُوْلٰى مِنَ الشَّهَادَةِ صَلَّى اللهُ

عَلَيْكَ يَا رَسُوْلُ اللهِ وَ عِنْدَ الثَّانِيَةِ مِنْهَا قُرَّةُ عَيْنِى بِكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ثُمَّ يُقَالُ اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِى بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ بَعْدَ وَضْعَ ظُفْرَىْ اَلاِبْهَامِيْنِ عَلَى الْعَيْنَيْنِ فَاِنَّهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكُوْنُ لَهُ قَائِدًا اِلَى الْجَنَّةِ

तर्जमाः जान लो कि बेशक अज़ान की पहली शहादत के सुनने पर सल्लल्लाहो अलैका या रसूलल्लाह और दूसरी शहादत के सुनने पर कुर्रतू ऐनीबिका या रसूलल्लाह कहना मुस्तहब है फिर अपने अंगूठों के नाखुन (चूम कर) अपनी आँखों पर रखे और कहे अल्लाहुम्मा मत्तीनी बिस्समई वलबसरी तो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसा करने वाले को अपने पीछे पीछे जन्नत में ले जायेगे।

(११) अल्लामा शामी रहमतुल्लाह अलैहि रद्दुल मुहतार शरह दुर्रेमुख़्तार में यही इबारत लिख कर फरमाते

كَذَا فِى كَنْزُ الْعِبَادُ قهستانى وَنحوه فى الْفَتَاوى الصّوفيه وَفِى كتاب الْفِردوس مَنْ قَبَّلَ ظُفْرَىْ اِبْهَامَيْهِ عِنْدَ سِمَاعِ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِى الْاَذَانِ اَنَا قَائِدُهٗ وَ مُدْخِلُهٗ فِى صُفُوْفِ الْجَنَّةِ وَتَمَامُهٗ فِى حَوَاشِى الْجَرُلِلرَّمْلِىْ (ردالمحتار شرح درمختار ج١ ص٣٧٠)

तर्जमाः ऐसा ही कन्जुलइबाद इमाम कहिस्तानी में और इसी की मिस्ल फतावा सूफिया में है और किताबुल फिरदौस में है कि जो शख़्स अज़ान में अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलल्लाह सुन कर अपने अंगूठों के नाखूनों को चूमे (इसके मुताल्लिक हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान है कि) मैं उसका क़ाइद बनूंगा और उसको जन्नत की सफों में दाख़िल करूंगा। उसकी पूरी बहस बहरुलराइक के हवाशी रमली में है।

(१२) रईसुल फुक़हा अलहनफ़िया अल्लामा तहतावी रहमतुल्लाह

अलैह शरह मराक़िउल फलाह में यही इबारत और दैलमी की हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हु वाली मरफूअ हदीस नक़्ल करके फरमाते हैं।

وَكَذَا رُوِىَ عَنِ الْخِضْرِ عَلَيْهِ السَّلَامِ وَبِمِثْلِهٖ يَعْمَلُ فِى الْفَضَائِلْ

(الطحطاوى على مراقى الفلاح ص١١١)

तर्जमाः और इसी तरह हज़रत खिज़्र अलैहिस्सलाम से भी रिवायत किया गया है और फ़जाइले अमाल में उन अहादीस पर अमल किया जाता है।

(१३) अल्लामा इमाम क़हिस्तानी शरह अलकबीह में कन्जुल इबाद से नक़ल फरमाते हैं।

اِعْلَمْ اَنَّهُ يُسْتَحَبُّ عِنْدَ سِمَاعِ الْاُوْلٰى مِنَ الشَّهَادَةِ الثَّانِيَةِ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَعِنْدَ سِمَاعِ الثَّانِيَةِ قُرَّةُ عَيْنِى بِكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ثُمَّ يُقَالُ اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِى بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ بَعْدَ وَضْعَ ظُفْرُ الْاَبْهَامَيْنِ عَلَى الْعَيْنَيْنِ فَاِنَّهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكُوْنُ قَائِدًا لَهُ اِلَى الْجَنَّةِ۔ (تفسير روح البيان ص٦٤٨)

तर्जमाः जान लो बिलाशुब्हा अज़ान की पहली शहादत के सुनने पर सल्लल्लाहो अलैका या रसूलल्लाह और दूसरी शहादत के सुनने पर कुर्रतू ऐनाबिका या रसूलल्लाह कहना मुस्तहब है फिर अपने अंगूठों के नाखुन (चूम कर) अपनी आँखों पर रखे और कहे अल्लाहुम्मा मतानी बिस्समए वलबसर तो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसा करने वाले को अपने पीछे पीछे जन्नत में लें जायेंगे।

(१४) शाफई मज़हब की मशहूर किताब "अआनतुत्तालेबीन अलल हल्लुल अलफाज़ फ़तेहुलमुईन" के सफ़हा २४७ और मालिकी मज़हब की मशहूर किताब

(१५) "किफायतुत्तालिब अलरब्बानी लिर्रिसालतु इब्ने अबी ज़ैदुल कैरवानी" के सफहा १६६ पर है कि जब अज़ान में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नामे पाक सुने तो दुरूद शरीफ पढ़े।

ثُمَّ يُقَبِّلُ إِبْهَامَيْهِ وَيَجْعَلُهُمَا عَلٰى عَيْنَيْهِ لَمْ يَعْمَ وَلَمْ يَرْمُدْ أَبَدًا

तर्जमाः फिर अंगूठे चूमे और उनको आंखों पर रखे तो न कभी अन्धा होगा और न कभी आँखें दुखेंगी।

(१६) शैखुल मशाइख, रईसुलमुहक्किक़ीन, सैय्यदुलउलमा अलहन्फिया बमक्कतुल मुकर्रमा मौलाना जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर मक्की रहमतुल्लाह अलैह अपने फतावा में फरमाते हैं कि

سُئِلْتُ عَنْ تَقْبِيْلِ الْإِبْهَامَيْنِ وَ وَضْعِهِمَا عَلَى الْعَيْنَيْنِ عِنْدَ ذِكْرِ اِسْمِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْأَذَانِ هَلْ هُوَ جَائِزٌ أَمْ لَا أَجَبْتُ بِمَا نَصُّهُ نَعَمْ تَقْبِيْلُ الْإِبْهَامَيْنِ وَ وَضْعُهُمَا عَلَى الْعَيْنَيْنِ عِنْدَ ذِكْرِ اِسْمِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْأَذَانِ جَائِزٌ بَلْ هُوَ مُسْتَحَبٌّ صَرَّحَ بِهٖ مَشَائِخُنَا۔ (منیر العین فی حکم تقبیل الابہامین ص ۱۴)

तर्जमाः मुझसे सवाल हुआ कि अज़ान में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस्में मुबारक के ज़िक्र के वक़्त अंगूठे चूमना और आँखों पर रखना जाइज़ है या नहीं? मैनें उन लफ़्ज़ों से जवाब दिया कि हां अज़ान में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नामें मुबारक सुन कर अंगूठे चूमना और आंखों पर रखना जाइज़ बल्कि मुस्तहब है हमारे मशाइख़े मज़हब ने इसके मुस्तहब होने की तस्रीह फरमाई है।

(१७) अलशैखुलआलिम अलमुफस्सिरुल अल्लामा नूरुद्दीन खुरासानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक अज़ान में सुन कर अंगूठे चूमा करता था। फिर छोड़ दिया, तो मेरी आँखें बीमार हो गई।

فَرَأَيْتُهُ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنَامًا فَقَالَ لِمَ تَرَكْتَ مَسْحَ عَيْنَيْكَ عِنْدَ الْأَذَانِ إِنْ أَرَدْتَ أَنْ تَبْرَأَ عَيْنَاكَ فَعُدْ إِلَى الْمَسْحِ فَاسْتَيْقَظْتُ وَمَسَحْتُ فَبَرِئَتْ وَلَمْ يُعَاوِدْنِيْ مَرَضُهُمَا إِلَى الْآنِ (نہج السلامۃ فی تقبیل الابہامین فی الاقامۃ ص ۴)

तर्जमाः तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा। फरमाया तूने अज़ान के वक़्त अंगूठे चूम कर आंखों से लगाना क्यों छोड़ दिया? अगर तू चाहता है कि तेरी आँखें दुरुस्त हो जाएं तो वह अमल फिर शुरू कर दे। पस मै बेदार हुआ और यह अमल शुरू कर दिया तो मेरी आँखें दुरुस्त हो गईं और उसके बाद अब तक वह मरज़ नहीं लौटा।

(१८) हज़रत वहब बिन मन्बा रज़ि अल्लाह अन्हु फरमाते हैं कि बनी इस्राईल में एक शख़्स था जिसने दो सौ बरस अल्लाह तआला की नाफरमानी में गुज़ारे थे। जब वह मर गया तो लोगों ने उसको मज़बला (जहां निजासत वग़ैरह डाली जाती है) में फेंक दिया तो अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को वही की कि उसको वहां से उठाओ और उस पर नमाज़ पढ़ो। मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! बनी इस्राईल उसके नाफरमान होने की शहादत देते हैं। इरशाद हुआ यह ठीक है।

إِلَّا أَنَّهُ كَانَ كُلَّمَا نَشَرَ التَّوْرَاةَ وَنَظَرَ إِلٰى اِسْمِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبَّلَهُ وَوَضَعَهُ عَلٰى عَيْنَيْهِ وَصَلّٰى اللّٰهُ عَلَيْهِ فَشَكَرْتُ ذٰلِكَ لَهُ وَغَفَرْتُ ذُنُوْبَهُ وَزَوَّجْتُهُ سَبْعِيْنَ حَوْرَاءَ۔ (حلیۃ الاولیاء ابونعیم ص ۴۲ و سیرۃ حلبیہ ج ۱ ص ۸۵)

तर्जमाः मगर इसकी आदत थी कि जब वह तौरेत को खोलता और (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के नामे पाक को देखता तो

उसक नाम को चूम कर आँखों से लगा लेता और दुरूद भेजता। पस मैंने उसका यह हक़ माना और उसके गुनाहों को बख़्श दिया और सत्तर हूरें उसके निकाह में दीं।

(१६) सय्यदुल आरेफीन हज़रत मौलाना रुम रहमतुल्लाह अलैह मसनवी शरीफ में फरमाते हैं।

बूद दरे इन्जील नामे मुस्तफा   आं सरे पैग़म्बरा बहरे सफा

तर्जमाः इन्जील में हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नामें मुबारक दर्ज था वह मुस्तफ़ा जो पैग़म्बरों के सरदार और बहरे सफा हैं।

बूद ज़िक्रे हुलया हाउ शक्ल औ   बूद ज़िक्रे ग़ज़े सूमो अक्ले औ

तर्जमाः नीज़ आपके औसाफे जिस्मानिया, शक्ल व शिमाइल, जिहाद करने, रोज़ा रखने और खाने पीने का हाल भी दर्ज था।

ताइफा नसरानियां बहरे सवाब   चूं रसीद नदे बदां नामो ख़िताब
बोसा दाद नदे बदां नामे शरीफ़   रू निहाद नदे बदां वस्फे लतीफ

तर्जमाः ईसाइयों की एक जमाअत जब उस नामे पाक और ख़िताबे मुबारक पर पहुँचती तो वह लोग बगरज़े सवाब उस नाम शरीफ को बोसा देते और उस ज़िक्रे मुबारक पर बतौर ताज़ीम मुंह रख देते।

नसील ईशा नेज़ हम बसियार शुद   नूरे अहमद नासिर आमद यार शुद

तर्जमाः (इस ताज़ीम की बदौलत) उनकी नस्ल बहुत बढ़ गई और हज़रत अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नूरे मुबारक (हर मुआमले में) उन को मददगार और साथी बन गया।

वां गिरोहे दीगर अज़ नसरानियां   नामे अहमद दाश्तन्दे मुसतहा

तर्जमाः और उन नसरानियों का वह दूसरा गरोह अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नामे मुबारक की बेक़दरी किया करता था।

मुस्तहाने ख़्वार गशतनदां फरीक़   गशता महरूमे अज़ खुदो शर्ते तरीक़

तर्जमाः वह लोग ज़लील व ख़वार हो गये अपनी हस्ती से भी महरूम हो गये (कि क़त्ल किये गये) और मज़हब से भी महरूम हो गये यानी अक़ाइद ख़राब हो गये।

नामें अहमद चूं चुनीं यारी कुन्द   ताकि नूरिश चूं मददगारी कुन्द

तर्जमाः जब हज़रत अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक ऐसी मदद करता है तो ख़्याल करो कि आप का नूरे पाक किस कदर मदद कर सकता है।

नामें अहमद चूं हिसारे शुद हसीन   ता चे बाशद ज़ाते आं रूहुलअमीन

तर्जमाः जब हज़रत अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नामें मुबारक ही हिफाज़त के लिए मज़बूत किला है तो उस रूहुलअमीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ाते मुबारक कैसी होगी।

(मसनवी शरीफ दफ़्तर अव्वल)

शुब्हा! बाज़ लोग यह कहते हैं कि यह तमाम अहादीस ज़ईफ हैं इनमें एक भी सही मरफू हदीस नहीं है चुनाचे मुहद्देसीन ने उन अहादीस को लिख कर फरमाया ला यसाह फिल मरफू लिहाज़ा अहादीसे ज़ईफा से किस तरह एक शरई मसला साबित हो सकता है?

इसके मुताल्लिक सिर्फ इतना अर्ज़ कर देना काफी है कि मुहद्देसीने किराम का किसी हदीस के मुताल्लिक फरमाना कि सही

नहीं इसके यह मानी नहीं होते कि ग़लत व बातिल है बल्कि इसका मतलब यह होता है कि यह सेहत के उस आला दर्जे को न पहुंची जिसे मुहद्‌देसीन अपनी इस्तेलाह में दर्जए सेहत कहते हैं। याद रखिए! इस्तेलाहे मुहद्‌देसीन में हदीस का सबसे आला दर्जा सही और सबसे बदतर मौजू है और वस्त में बहुत से अक़साम हैं जो दर्जा बदर्जा मुरत्तब हैं। सही के बाद हसन का दर्जा है लिहाज़ा नफी सेहत नफीए हसन को मुस्तलिज़्म नहीं। बल्कि अगर ज़ईफ़ भी हो तो फ़ज़ाइले अमाल में हदीस जईफे बिलइज्मा मक़बूल है और उन अहादीस के मुताल्लिक मुहद्देसीन का यसहा फिल मरफू यानी यह तमाम अहादीस हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक मरफू हो कर सही साबित नहीं हुई फरमाना साबित करता है कि यह अहादीस मौकूफ सही हैं।

(२०) चुनाचे अल्लामा इमाम मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं।

قُلْتُ وَاِذَا ثَبَتَ رَفْعُهُ اِلَى الصِّدِّيْقِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ فَيَكْفِى لِلْعَمَلِ بِهٖ لِقَوْلِهٖ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِىْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ

(موضوعات کبیر ص ۶۴)

तर्जमा: मैं कहता हूँ कि जब इस हदीस का रफा हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाह अन्हु तक साबित है तो अमल के लिए काफी है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि मैं तुम पर लाज़िम करता हूँ अपनी सुन्नत और अपने खुलफाए राशिदीन की सुन्नत।

मालूम हुआ कि हदीस मौकूफ़ सही है क्योंकि सय्यदना सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु तक इसका रफा साबित है। और सय्यदना सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाह अन्हु की सुन्नत, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम की सुन्नत है। चुनाचे मुख़ालेफीन के सरदार मौलवी ख़लील अहमद अमबेठवी व मौलवी रशीद अहमद गंगोही कहते है।" जिसके जवाज़ की दलील कुरूने सलासा में हो ख़्वाह वह जज़बए बवजूदे ख़ारजी उन कुरून में हुआ या न हुआ और ख़्वाह उसकी जिन्स का वजूद ख़ारिज में हुआ हो या न हुआ हो वह सब सुन्नत है (बराहीने क़ातिया सफहा २८) साबित हुआ कि गंगोही साहब के नज़दीक अज़ान में नामे अक़दस सुन कर अंगूठे चूमना सुन्नत है क्योकि मुल्ला अली क़ारी की इबारत से कुरूने सलासा में उसकी असल मुतहक़्क़िक़ हो गई। फिर उसको बिदअत वगैरह कहना जिहालत और ताअस्सुब नहीं तो और क्या है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अपने सुन्नी भाईयों की ख़िदमत में

मेरे सुन्नी भाईयों। होश में आओ। ख़बरदार हो जाओ। यह दौर बड़े नाज़ुक और फितनों का दौर है। सख़्त आज़माइश का वक़्त है। बेदीनी और बद अक़ीदगी की आन्धियां और गुमराही के तूफान ज़ोरों पर है। लिहाज़ा अपने ईमान व अक़ाइद की खूब हिफाज़त करो और बुज़ुर्गाने दीन के तरीक़े पर क़ायम रहो। ग़ैरों की सोहबत व मज़लिस और तक़ारीर व लिटरेचर से इज्तेनाब करो और उलमाए रब्बानीन, बुजुर्गाने दीन सलफे सालेहीन के हालात का मुताला करो और उनकी किताबें पढ़ो और सौम व सलात की पाबन्दी करो। दुरूद व सलाम की कसरत रखो। क्योंकि ईमान की सलामती इससे वाबस्ता है। शरीअत के मुताबिक दाढ़ियां रखो। सादा व सुथरा लिबास पहनो। सरों पर अंग्रेज़ी बाल न रखो। कानों तक पट्टे रखो। किसी अल्लाह वाले की सोहबत इख़्तियार करो जो सही मानों में अल्लाह वाला हो। आपस में इत्तेफाक़ व मुहब्बत से रहो। अल्लाह करीम तबारक व तआला बतुफैल अपने हबीबे करीम सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम हमें अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ाइद व आमाल पर क़ायम रखे और ख़ात्मा ईमान पर फरमाये। आमीन सुम्मा आमीन बहुरमते सय्यदुल मुर्सलीन रहमतुल लिलआलमीन शफीउल मुज़नेबीन सल्लल्लाहो तआला अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

तालिबे दुआ

मुहम्मद शफी अलख़तीब औकारवी गुफिरालहू करांची